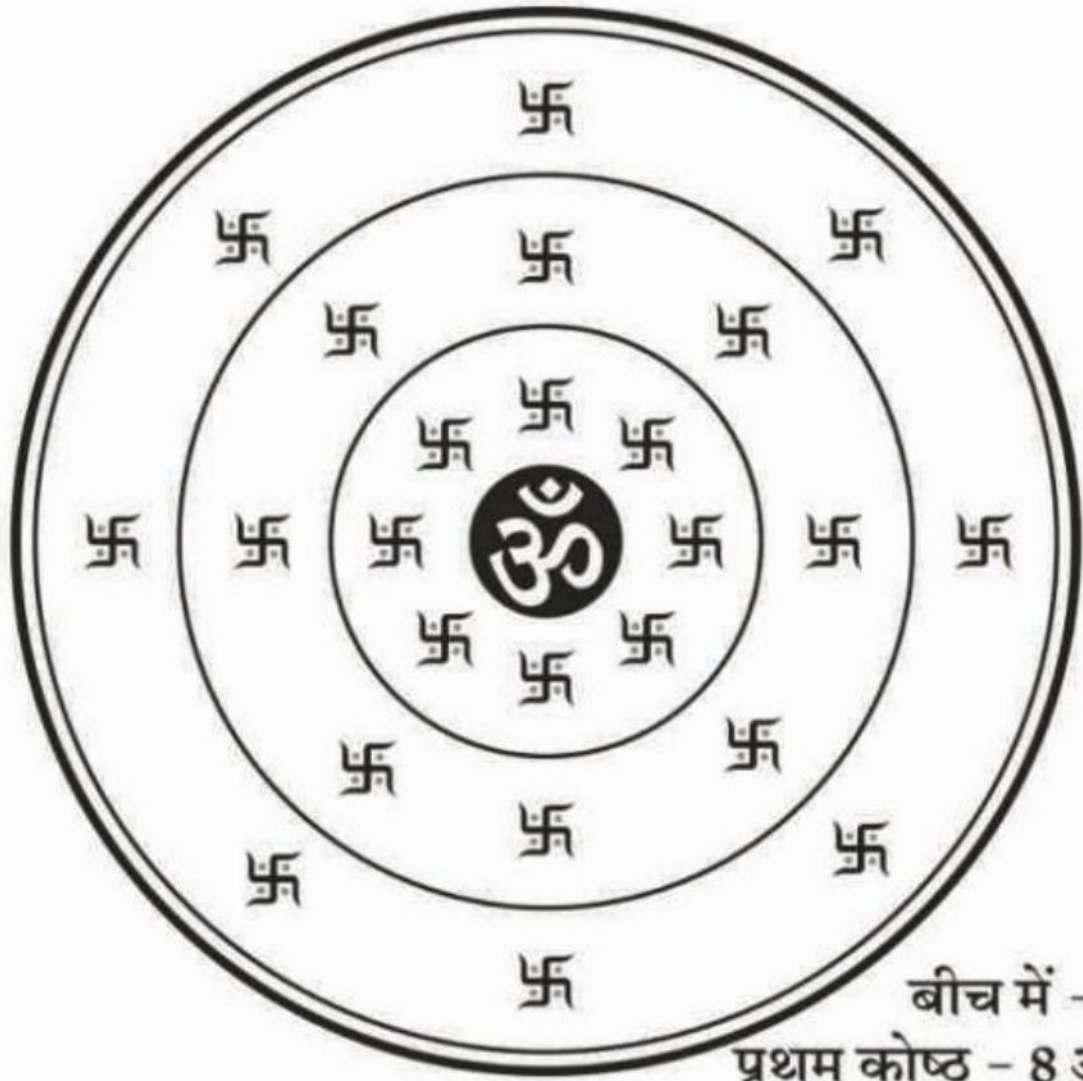


श्री महावीर स्वामी पूजा विधान माण्डला



बीच में - ॐ

प्रथम कोष्ठ - 8 अर्घ्य

द्वितीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य

तृतीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य

कुल - 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री महावीर स्तवन

दोहा- माँ त्रिशला सिद्धार्थ सुत, महावीर भगवान ।

जिनकी अर्चा कर मिले, शिवपद का सोपान ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

नगर विशाल रहा कुण्डलपुर, नर सुरेन्द्र आदिक से मान्य ।
कामरूप हाथी के मर्दन, करने हेतु सिंह समान ॥
सिंह चिन्ह से शोभित हैं जो, ऐसे वीर श्री वर्द्धमान ।
सबके द्वारा वन्दनीय हैं, जन्मे महावीर भगवान ॥1॥
जिन भगवान वीर का पावन, धर्म पवित्र रहा अभिराम ।
अर्थ काम सुख देने वाला, स्वर्ग मोक्ष दाता शिवधाम ॥
ऐसे श्री देवाधिदेव जिन, अनुपम वीर नाथ भगवान ।
के चरणों में नमन हमारा, क्षण में करें जगत कल्याण ॥2॥
धर्म अनादि से विदेह में, चलता आया महति महान ।
ऋषभ देवजी इस युग में भी, किए प्रवृत्ति जिसकी आन ॥
अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक, बाईस तीर्थकर पाते आप ।
उसी धर्म का महावीर प्रभु, किए निरूपण नाशे पाप ॥3॥
नित्य सनातन रहा धर्म यह, काल अनादी अपरम्पार ।
किसी क्षेत्र या किसी काल में, और किसी भी अन्य प्रकार ॥
किसी रूप से बदल सके न, धर्म विशद जो मंगलकार ।
जैसा है वैसा ही रहेगा, काल अनादी विस्मयकार ॥4॥

दोहा- कुण्डलपुर जन्मे प्रभू, पाए राजगृही ज्ञान ।

पावापुर से शिव गये, पाए पद निर्वाण ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

श्री महावीर स्वामी पूजा विधान (लघु)

स्थापना

हे वर्धमान ! हे महावीर !, अतिवीर वीर सन्मति स्वामी ।
हे शासन नायक ! इस युग के, हे त्रिभुवन पति अन्तर्यामी !
हम शीश झुकाते तव चरणों, आशीष आपका पा जाएँ ।
आह्वानन करते निज उर में, हम महिमा प्रभु जी शुभ गाएँ ॥

दोहा- वीर वीरता दो हमें, करें कर्म का नाश ।

यही भावना है विशद, पाएँ शिवपुर वास ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

आतम अनुभव का निर्मल जल, हम निज भावों से लाए हैं ।
जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं ॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है ।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुभ आतम अनुभव का चन्दन, हे नाथ ! चढ़ाने लाए हैं ।
संसारताप का नाश होय प्रभु, पद अर्चा को आए हैं ॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है ।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
धोकर अक्षत निज अनुभव के, यह पूजा करने लाए हैं।
पद अक्षय पाने नाथ चरण, हम भाव बनाकर आए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥३॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
हम शुद्धातम के विविध पुष्प, यह आज चढ़ाने लाए हैं।
हो काम रोग विध्वंश शीघ्र, प्रभु चरण शरण में आए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥४॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य बनाए निजगुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो क्षुधारोग उपशान्त प्रभो !, सदियों से सतत् सताए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥५॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
मिथ्यातम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥६॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्टकर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥७॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन की विधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥८॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाएँ हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं॥
हे वीर प्रभो ! शासन नायक, तुमने शिवमार्ग दिखाया है।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, यह भाव हृदय में आया है॥९॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा दे रहे, विनय भाव के साथ।

विशद भावना भा रहे, बनें श्री के नाथ॥

(शान्तये शान्तीधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने मुक्तीधाम।

होवे पूरी कामना, करते चरण प्रणाम॥

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।

चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली ॥१॥

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।

प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए ॥२॥

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।

मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया ॥३॥

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।

सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ ॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त
श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ति से नाता जोड़े।

कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए ॥५॥

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - अन्तिम तीर्थकर हुए, महावीर भगवान ।

गाते हैं जयमाल हम, करते शुभ गुणगान ॥

(वीर छन्द)

हे वर्तमान शासन नायक ! हे युग दृष्टा ! हे महावीर !
हे जग जीवों के उद्धारक ! पुरुषार्थ साध्य साधक सुधीर ॥
महावीर आपकी वाणी का, सर्वत्र गूँजता चमत्कार ।
जग जीवों के हे सूत्रधर !, तव चरणों वन्दन बार बार ॥1॥
नृप सिद्धारथ के पुत्र रत्न, माता त्रिशला के मुदित भाल ।
हे अन्तिम तीर्थकर पावन, मुक्ती पथ के पंथी विशाल ।
हे तीन लोक के अधिनायक ! सर्वज्ञ प्रभो ! हे वीतराग ॥
हे परम पिता ! हे परम ईश ! अन्तर में जागे शुभम राग ॥2॥
जिन प्रभाव दर्शन करके, सब कर्म पाप कट जाते हैं ।
जो भाव सहित अर्चा करते, मन वांछित फल वे पाते हैं ।
है वीतराग मुद्रा जिन की, भव्यों के मन को भाती है ।
जो ध्यान करे प्रभु का मानो, वो अपने पास बुलाती है ॥3॥

दोहा - जिन पद की पूजा करे, मिलकर सकल समाज ।

यही भावना है विशद, सफल होंय सब काज ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हे जिनवर स्वामी ! त्रिभुवननामी कोटि नमामि जग ख्याता ।

हेजग उद्धारक ! पाप निवारक शिव पथ दायक शिवदाता ॥

(इत्याशीर्वाद)

प्रथम वलय

दोहा - छियालिस गुण दश धर्मयुत, रत्नत्रय तपवान ।
विघ्न विनाशी शांति कर, पूज रहे भगवान ॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सहस्राष्ट लक्षण के धारी, अतिशय रूप सुगन्धीवान ।
वज्र वृषभ नाराच संहनन, सम चतुस्त्र संस्थान प्रधान ॥
बल अतुल्य प्रिय हित वाणी युत, ना पसेव ना रहे निहार ।
श्वेत रुधिर तन का दश अतिशय, जन्म समय के मंगलकार ॥
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार ।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥१॥

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।
शत योजन में हो सुभिक्षता, गमनागमन ना कवलाहार ।
अदया रहित चतुर्दिक दर्शन, हो उपसर्गों का परिहार ॥
सब विद्या के ईश्वर छाया, रहित बड़े ना ही नख केश ।
नाही झलकते पलक नेत्र के, दश अतिशय ये कहे विशेष ॥
तीर्थंकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थंकर प्रकृति को धार ।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥२॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।
भाषा अर्ध मागधी निर्मल, दिश आकाश मित्रतावान ।
खिलें फूल फल सब ऋतुओं के, पृथ्वी होवे काँच समान ॥

चरण कमल तल कमल गगन में, गंधोदक की होवे वृष्टि ।
मंद सुगन्ध बयार गगन में, जय-जय हो हर्षित सब सृष्टि ॥
कंटकरहित भूमि मंगलद्रव्य, धर्मचक्र हो अग्र गमन ।
अतिशय देव रचित ये चौदह, करें भव्य प्रभु का अर्चन ॥३॥

ॐ ह्रीं देवकृत चतुर्दश अतिशय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्श अनन्त ज्ञान सुखधारी, बल अनन्त पावें भगवान ।
अनन्त चतुष्टय के धारी हो, पाने वाले केवलज्ञान ॥
तीर्थाकर प्रभु जी यह पावें, तीर्थाकर प्रकृति को धार ।
ऐसे प्रभु के चरण कमल में, वन्दन मेरा बारम्बार ॥४॥

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

जन्म जरा चिंता विस्मय रुज, क्षुधा तृषा निद्रा या खेद ।
राग द्वेष भय मरण मोह मद, शोक अरति अरु जानो स्वेद ॥
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, जगती पति होते भगवान ।
भव्य जीव जिनकी अर्चाकर, पावें पावन पुण्य निधान ॥५॥

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

तरु अशोक त्रय छत्र शोभते, दिव्य ध्वनि हो मंगलकार ।
रत्नमयी सिंहासन दुन्दुभि, भामण्डल सोहे मनहार ॥
पुष्पवृष्टि हो देवों द्वारा, चौंसठ चँवर दुराएँ देव ।
प्रातिहार्य यह आठ प्रभू के, समवशरण में होय सदैव ॥६॥

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम तप जान।
त्यागाकिंचन ब्रह्मचर्य धर, ऋषिवर पाते शिव सोपान॥
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान॥७॥

ॐ ह्रीं दशधर्म युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित शुभ, रत्नत्रय है मंगलकार।
जिसको धारण करके प्राणी, हो जाते हैं भव से पार॥
मोक्ष मार्ग के राही बनकर, करते हैं जग का कल्याण।
जिनकी अर्चा करते श्रावक, भाव सहित करते गुणगान॥८॥
ॐ ह्रीं रत्नत्रय युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा - प्रातिहार्य अतिशय तथा, अनन्त चतुष्टयवान।

रत्नत्रय तप धर्म युत, पूजें हम भगवान॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद मूलगुण दशधर्मरत्नत्रय प्राप्त श्रीमहावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वा।

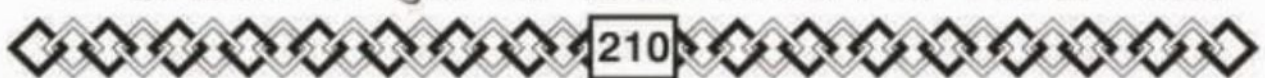
द्वितीय वलय

दोहा - विविध गुणों के कोषजिन, शिव सुख के दातार।
जिनपद में पुष्पांजलि, करते बारम्बार॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अनशन ऊनोदर कर वृत्ति, परिसंख्यान और रस त्याग।
विविक्त शैय्यासन कायक्लेश तप, बाह्य सुतप छः में अब लाग॥
प्रायश्चित्त वैय्यावृत्ति स्वाध्याय, विनय और व्युत्सर्ग सुध्यान।
द्वादश तपकर कर्म निर्जरा, करके पाते पद निर्वाण॥१॥

ॐ ह्रीं द्वादश तप युक्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।



हम आकांक्षी धन दौलत के, मोहित हो द्रव्य कमाते हैं।
है मोक्ष लक्ष्मी शाश्वत् शुभ, हम प्राप्त नहीं कर पाते हैं॥
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं शाश्वत् लक्ष्मी प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
पुरुषार्थ करे प्राणी भारी, ना लाभ पूर्णता मिल पाए।
अर्चा करके जग जीवों का, लाभान्तराय भी नश जाए॥
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाए।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।
चिन्ताएँ सतत् सताती हैं, ना शांती मन में आ पाए।
पूजा करने से जिनवर की, चिन्ता भी पूर्ण विनश जाए॥
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं चिन्ताविनाशक चिन्तामणि समान फलदायक श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहता अशान्त मन मेरा यह, जिससे आकुलता हो भारी।
जो रागद्वेष तजकर मन से, हो जाए समता का धारी॥
हम धर्म ध्यान शुभ प्राप्त करें, शिव पथ के राही बन जाएँ।
जो पद पाया है वीरा ने, उस पदवी को हम भी पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं मंगल शांति दायक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा - विघ्न विनाशी आप हैं, महावीर तीर्थेश ।

अर्चा को पुष्पांजलि, करते यहाँ विशेष ॥

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

“चौपाई”

मन- वच-तन के पड़े हैं फेरे, अतः कर्म रहते हैं घेरे ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए ॥1॥

ॐ ह्रीं संसारदुःख नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कर्मोदय ने हमको घेरा, दरिद्रता ने डाला डेरा ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वदरिद्रता नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

कर्मोदय में खोते आए, जलोदरादिक रोग सताए ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए ॥3॥

ॐ ह्रीं जलोदरादिक रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।

टी. बी. शुगर आदिक बीमारी, सदा सताए सबको भारी ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ती पाए ॥4॥

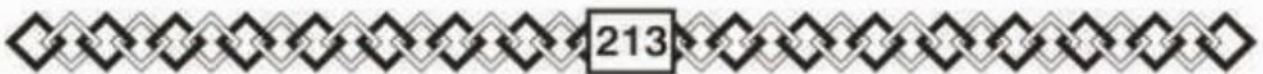
ॐ ह्रीं टी.बी शुगरादि रोग नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेत्र कर्ण के रोग कहाए, भारी उससे सदा सताएँ ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए ॥5॥

ॐ ह्रीं नेत्र कर्णादिक रोगनाशक श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।



वात पित्त ज्वर आदिक भाई, रहे लोक में ये दुखदायी ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए ॥६॥

ॐ ह्रीं वात पित्त कफ जलोदर उदरादि सर्वरोग नाशक श्री महावीर
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल थल नभचर प्राणी भाई, कृत उपसर्ग रहे दुखदायी ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए ॥७॥

ॐ ह्रीं तिर्यचकृत उपद्रव नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पिता पुत्र भाई जो गाए, राग द्वेष कर सभी सताए ।

वीर प्रभु को जो भी ध्याए, संकट से वह मुक्ति पाए ॥८॥

ॐ ह्रीं कुटुम्ब दुःख क्लेश नाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा ।

दोहा - जिन अर्चा कर जीव को, ऋद्धि सिद्धि हो प्राप्त ।

इस भव के सुख प्राप्तकर, बनें स्वयंभू आप्त ॥

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि सिद्धि प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मूलगुणों के धारी अर्हत्, रत्नत्रय तप धर्मवान ।

विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, करने वाले जग कल्याण ॥

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते, वीर प्रभू पद अपरम्पार ।

‘विशद’ भावना भाते हैं हम, प्राप्त करें प्रभु शिव का द्वार ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्ह महावीर जिनेन्द्राय नमः ।

समुच्चय जयमाला

दोहा - जिनको ध्याते भाव से, जग के बालाबाल ।

महावीर भगवान की, गाते हम जयमाल ॥

(सुवीर छन्द)

हे वीर प्रभु ! हम द्वार आपके, आके करें पुकार ।
चरण शरण दो हमको स्वामी, करो शीघ्र उद्धार ॥
भक्तों पर दृष्टी डालो प्रभु, रहे सदा श्रद्धान ।
विशद भावना भाते हैं हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान ॥१॥
इतना साहस रहे हृदय में, देवागम ऋषिराज ।
सदा रहे इनके श्रद्धानी, रहे मेरे सरताज ॥
श्री जिन की वाणी को सुनकर, पालें निज कर्तव्य ।
हृदय बसे जिनवाणी नितप्रति, स्याद्वाद मय भव्य ॥२॥
सप्त तत्त्व का ज्ञान जगे उर, बीज पदों का ध्यान ।
तत्त्व अर्थ को हृदय धारकर, पाएँ भेद विज्ञान ॥
शिव पथ के राही गुरु गाए, पालें पंचाचार ।
भव्यों को सन्मार्ग प्रदायक, होते जग हितकार ॥३॥
अर्ज हमारी इतनी सी है, हे प्रभु ! कृपा निधान ।
अर्चा करें आपकी मेरा, घटे पाप अभिमान ॥
दिया आपने भक्तों को प्रभु, मुँह माँगा वरदान ।
योग्य समझकर भर दो झोली, हे प्रभु ! कृपा निधान ॥४॥
जिन शासन जयवन्त रहे प्रभु, जिनवाणी जिन संत ।
व्रत का पालन करें भाव से, पाएँ भव का अंत ॥

दोहा - वर्धमान सन्मति प्रभो ! वीरातिवीर महावीर ।

अर्चा की है भाव से, मैटो भव की पीर ॥

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री महावीर जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

दोहा - पूजा करते आपकी, हे त्रिभुवन के ईश !

पुष्पांजलि करते विशद, झुका रहे पद शीश ॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आरती महावीर प्रभु की तर्ज - इह विध.....

वीर प्रभू की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे ।

श्री सिद्धार्थ पिता कहलाए, माता त्रिशला देवी पाए ॥

मगध देश वैशाली गाया, जन्म नगर कुण्डलपुर पाया ॥1॥

षष्ठी शुक्ला आषाढ़ कहाए, गर्भ में चयकर स्वर्ग से आए ॥2॥

चैत शुक्ल तेरस दिन आया, जन्म प्रभु ने अतिशय पाया ॥3॥

मगसिर दशमी तिथि को भाई, परं दिगम्बर दीक्षा पाई ॥4॥

दर्श शुक्ल वैशाख बखानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी ॥5॥

कार्तिक कृष्ण अमावश पाए, पावापुर से मोक्ष सिधाए ॥6॥

वर्धमान सन्मति कहलाए, वीर और अतिवीर कहाए ॥7॥

महावीर प्रभू नाम के धारी, हुए लोक में मंगलकारी ॥8॥

स्वर्ण रंग तन का प्रभु पाए, सात हाथ ऊँचे कहलाए ॥9॥

वर्ष बहत्तर आयू पाए, विशद लोक में पूज्य कहाए ॥10॥

जो भी प्रभु की आरति गाए, वह अपना सौभाग्य जगाए ॥11॥

तीन योग से जिन पद ध्याएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ ॥12॥

